विद्या ददाति विनयम्

संजीव®

सरसा पाठशाला

RPSC 2ND ग्रेड हिंदी

14 हल प्रश्न पत्र

व्याख्या सहित

5वाँ संस्करण

राजस्थान लोक सेवा आयोग अजमेर द्वारा जारी नवीनतम उत्तरमाला के आधार पर
वरिष्ठ अध्यापक (द्वितीय श्रेणी शिक्षक) हिंदी के 14 हल प्रश्न पत्र

लेखक

कैलाश नागौरी
(सरसा पाठशाला ऐप)
वॉट्सऐप- 9660669988

संपादक

डॉ. दीपेश कुमार सैनी

संजीव प्रकाशन, जयपुर

- **प्रकाशक :**
  संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,
  जयपुर-03
  website : www.sanjivprakashan.com

- © **किरण** (सरसा पब्लिकेशन)

- **संस्करण**- 2026 (5वाँ)
- **मूल्य : ₹280**
- **लेजर कम्पोजिंग :**
  संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर
- **मुद्रक :** मनोहर आर्ट प्रिन्टर्स, जयपुर

- ❑ इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं-
  Email : sanjeevcompetition@gmail.com
  पता : प्रकाशन विभाग, संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर
  आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।
- ❑ इस पुस्तक के किसी भी अंश का पुनरुत्पादन या किसी प्रणाली के सहारे पुनर्प्राप्ति का प्रयास अथवा किसी भी तकनीक या तरीके-इलेक्ट्रोनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या वेब माध्यम से प्रकाशक की अनुमति के बिना प्रकाशन या वितरण नहीं किया जा सकता है।
- ❑ हमने अपने प्रयास से इस पुस्तक के तथ्यों तथा विवरणों को उचित स्रोतों से प्राप्त किया है। इस पुस्तक में प्रकाशित किसी भी सूचना की सत्यता या त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।
- ❑ सभी प्रकार के प्रतिवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

अनुक्रमणिका

क्र.स.	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	द्वितीय श्रेणी अध्यापक 'हिंदी'- 2025 (माध्यमिक शिक्षा)	05
2.	द्वितीय श्रेणी अध्यापक 'हिंदी'-2024 (संस्कृत शिक्षा)	22
3.	द्वितीय श्रेणी अध्यापक 'हिंदी'- 2022 (माध्यमिक शिक्षा)	38
4.	द्वितीय श्रेणी अध्यापक 'हिंदी'- 2022 (संस्कृत शिक्षा)	56
5.	द्वितीय श्रेणी अध्यापक 'हिंदी'- 2018 (माध्यमिक शिक्षा)	70
6.	द्वितीय श्रेणी अध्यापक 'हिंदी'- 2018 (संस्कृत शिक्षा)	85
7.	द्वितीय श्रेणी अध्यापक 'हिंदी'- 2018 (विशेष शिक्षा)	100
8.	द्वितीय श्रेणी अध्यापक 'हिंदी'- 2015 (विशेष शिक्षा)	114
9.	द्वितीय श्रेणी अध्यापक 'हिंदी'- 2016 (माध्यमिक शिक्षा)	127
10.	द्वितीय श्रेणी अध्यापक 'हिंदी'- 2014 (माध्यमिक शिक्षा)	140
11.	द्वितीय श्रेणी अध्यापक 'हिंदी'- 2013 (विशेष शिक्षा)	155
12.	द्वितीय श्रेणी अध्यापक 'हिंदी'- 2011 (माध्यमिक शिक्षा)	169
13.	द्वितीय श्रेणी अध्यापक 'हिंदी'- 2010 (माध्यमिक शिक्षा)	183
14.	द्वितीय श्रेणी अध्यापक 'हिंदी'- 2010 (माध्यमिक शिक्षा)	196

स्कूल व्याख्याता एवं वरिष्ठ अध्यापक हिंदी के लिए
संजीव व सरसा पाठशाला की अति महत्त्वपूर्ण पुस्तकें

- सारिका–प्रथम श्रेणी शिक्षक भर्ती परीक्षा हेतु
- चित्रा–द्वितीय श्रेणी शिक्षक भर्ती परीक्षा हेतु
- सरसा काव्यशास्त्र–प्रथम श्रेणी शिक्षक भर्ती परीक्षा हेतु
- रूचिरा काव्यशास्त्र–द्वितीय श्रेणी शिक्षक भर्ती परीक्षा हेतु
- कविमाला वस्तुनिष्ठ
- हिंदी साहित्य का सरल एवं सुबोध इतिहास
- साहित्य मंजरी- हिंदी साहित्य एक्जाम रिव्यू
- आरपीएससी-32 हिंदी सॉल्वड पेपर्स 2010 से 2025
- सामान्य हिंदी व्याकरण

''पाँचवें संस्करण की भूमिका''

संजीव प्रकाशन से प्रकाशित इस पुस्तक का प्रथम संस्करण खूब प्रशंसनीय रहा है। यह इस पुस्तक का पंचम् पूर्णतया संशोधित एवं संवर्द्धित संस्करण हैं। राजस्थान लोक सेवा आयोग से वरिष्ठ अध्यापक भर्ती परीक्षा हिंदी के लिए अब तक जितने भी ज्ञात पेपर हुए हैं, उन सभी पेपर्स का एक जगह संकलन वाकई में खूब चर्चित है। किसी ने सच ही कहा है कि मुख्य परीक्षा में बैठने से पहले उस परीक्षा के पूर्व के पेपर्स का अवलोकन करने से मुख्य परीक्षा का पैमाना परखा जा सकता है कि परीक्षा का स्तर एवं प्रश्नों की शैली किस प्रकार की रहने वाली है। विद्यार्थियों के हित में इस नवीनतम संस्करण में राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित द्वितीय श्रेणी के हिंदी विषय के सभी **14 प्रश्न पत्र** वर्ष 2010 से 2025 तक के शामिल किए गए हैं। प्रत्येक प्रश्न पत्र के उत्तर RPSC की उत्तरमाला के आधार पर लगाए गए हैं। फिर भी RPSC द्वारा जारी उत्तरमाला से मिलान अवश्य कर लेवें, क्योंकि संशोधित परिणाम में उत्तरमाला भिन्न भी हो सकती है। वर्तमान परीक्षाओं के सिलेबस के अनुसार प्रश्नों की सरल भाषा में व्याख्या की गई है। पुस्तक के लेखन एवं टाईपिंग में पूर्णतया सावधानी बरती गई है, फिर भी मानवीय स्वभाववश कहीं त्रुटि होना स्वाभाविक है, इसलिए किसी भी प्रकार की त्रुटि के लिए लेखक एवं प्रकाशक जिम्मेदार नहीं है। हमारा आपसे निवेदन है कि यदि पुस्तक में कहीं त्रुटि पायी जाती है तो इसे अनदेखा नहीं करें। आप हमें वाट्सऐप नंबर 9660669988 पर मैसेज करके चर्चा अवश्य करें। हमें आपके सुझाव अवश्य ही और बेहतर करने के लिए प्रेरित करेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मैं पिछली बार की तरह इस बार भी आपके सुझावों से वंचित नहीं रहूँगा।

धन्यवाद!

✍ कैलाश नागौरी

(सरसा पाठशाला)

नई बुक्स की जानकारी, अपडेट, बुक खरीदने व टेस्ट सीरीज के लिए सरसा पाठशाला ऐप डाउनलोड करें।

पेपर 1 द्वितीय श्रेणी अध्यापक 'हिंदी'-2025 (माध्यमिक शिक्षा)

(परीक्षा तिथि- 8 सितम्बर 2025)

1. किस विकल्प के सभी शब्द अशुद्ध हैं?
(अ) दिवाली, घोटाला, केंद्रीय
(ब) अंधाधुंध, डावांडोल, आगंतुक
(स) व्यवसायिक, मार्मिक, पर्वतीय
(द) क्योकि, गृहणी, आहवान

व्याख्या-(द) क्योकि, गृहणी और आहवान अशुद्ध शब्द है। इनका शुद्ध रूप इस प्रकार होगा- क्योंकि, गृहिणी, आह्वान। अन्य शुद्ध शब्द- डाँवाडोल, व्यावसायिक।

2. निम्नलिखित में से अशुद्ध शब्द नहीं है?
(अ) अधिशाषी (ब) भर्तस्ना
(स) पुनरपि (द) पश्चाताप

व्याख्या-(स) पुनरपि शुद्ध शब्द है।

3. निम्न में से शुद्ध शब्द है?
(अ) लब्धप्रतिष्ठ (ब) अक्षोहिणी
(स) सौंदर्यता (द) आधीन

व्याख्या-(अ) लब्धप्रतिष्ठ शुद्ध शब्द है। शेष अशुद्ध शब्दों के शुद्ध रूप इस प्रकार होगा-अक्षौहिणी, सौंदर्य, अधीन।

4. निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य नहीं है?
(अ) नौकर के हाथ भेज देना।
(ब) आज तुम फिर इतनी देर में आये।
(स) यह पद कई भावों को प्रकट करता है।
(द) अब मेरी बात मान लो।

व्याख्या-(स) यह पद कई भावों को प्रकट करता है, अशुद्ध वाक्य है। इसका शुद्ध रूप इस प्रकार होगा- यह पद कई भाव प्रकट करता है।

5. निम्नलिखित में से किस विकल्प के सभी शब्द शुद्ध हैं?
(अ) वाल्मीकि, निरोग, नुपुर
(ब) सुई, अनुग्रहित, दृष्टा
(स) भगीरथी, द्वारका, अन्तर्द्वंद्व
(द) आगामी, बरात, स्वादिष्ठ

व्याख्या-(द) आगामी, बरात और स्वादिष्ठ शुद्ध शब्द है। शेष अशुद्ध शब्दों के शुद्ध रूप-निरोग=नीरोग। नुपुर=नुपूर। अनुग्रहित=अनुगृहित। दृष्टा=द्रष्टा। भगीरथी=भगीरथि।

6. इनमें से कौन सा वाक्य शुद्ध है?
(अ) कोट का दाम पाजामे से अधिक होता है।
(ब) ये भी वैसे ही पंडित हैं, जैसे आप।
(स) वे अपने आपको समझदार और दूसरे को बेईमान समझते हैं।
(द) आपके सब काम हमसे अच्छे होते हैं।

व्याख्या-(ब) ये भी वैसे ही पंडित हैं, जैसे आप। शुद्ध वाक्य है। शेष अशुद्ध वाक्यों के शुद्ध रूप-
- कोट का दाम पाजामे के दाम से अधिक होता है।
- वे अपने आप को समझदार और दूसरों को बेईमान समझते हैं।
- आपके सब काम हमारे काम से अच्छे होते हैं।

7. अशुद्ध वाक्य नहीं है?
(अ) आत्मा के अन्दर बल होना चाहिए।
(ब) बजट के ऊपर बहस होगी।
(स) उसने गुरु के चरणों में अपना सिर रख दिया।
(द) वह मुझ पर क्रुद्ध है।

व्याख्या-(द) वह मुझ पर क्रुद्ध है, शुद्ध वाक्य है। शेष अशुद्ध वाक्यों के शुद्ध रूप-
- आत्मा में बल होना चाहिए।
- बजट पर बहस होगी।
- उसने गुरु के चरणों में सिर नवाया।

8. अल्पविराम चिह्न के प्रयोग के संदर्भ में असंगत कथन है?
(अ) संबोधन कारक की संज्ञा और संबोधन शब्दों के पश्चात् अल्पविराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है।
(ब) छंदों में बहुधा पति के पश्चात् अल्पविराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है।
(स) समानाधिकरण राब्दों के मध्य अल्पविराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है।
(द) जब कई शब्द भेद जोड़े से आते हैं, तब प्रत्येक जोड़े के मध्य अल्पविराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

व्याख्या-(द) सही वाक्य इस प्रकार होगा- जब कई शब्द भेद जोड़े से आते हैं, तब प्रत्येक जोड़ के मध्य हाइपन (-) का प्रयोग किया जाता है।

9. निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य है ?
(अ) वे अनेक कला जानते हैं।
(ब) श्रोताओं में कई श्रेणियों के लोग थे।
(स) वृक्षों पर कोयल कूक रही है।
(द) अपने-अपने घरों से ले आओ।

व्याख्या-(ब) श्रोताओं में कई श्रेणियों के लोग थे, शुद्ध वाक्य है। शेष अशुद्ध वाक्यों के शुद्ध रूप-
(1) वे अनेक कलाएँ जानते हैं।
(2) वृक्ष पर कोयल कूक रही है।
(3) अपने-अपने घर से ले आओ।

10. योजक चिह्न का प्रयोग निम्नलिखित में से कहाँ नहीं होता है?
(अ) द्वन्द्व समास के पदों के बीच में।
(ब) किसी पुस्तक या अवतरण के साथ, उसके लेखक के नाम से पहले।
(स) पदबंध को सामासिक पद बनाने के लिए।
(द) पुनरुक्त शब्दों के बीच में।

व्याख्या-(ब) किसी पुस्तक या अवतरण के साथ, उसके लेखक के नाम से पहले योजक चिह्न (-) का प्रयोग नहीं होता है।

11. किसी के वाक्यों को उद्धृत करने के पूर्व निम्नलिखित में से किस विराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है?
(अ) अवतरण चिह्न (ब) अर्द्धविराम चिह्न
(स) निर्देशक चिह्न (द) योजक चिह्न

व्याख्या-(स) किसी के वाक्यों को उद्धृत करने से पूर्व निर्देशक चिह्न का प्रयोग होता है।

12. किस वाक्य में विराम चिह्नों का सही प्रयोग हुआ है?
(अ) आपने बताया नहीं कि आप, कहाँ रहते हैं?
(ब) आपने बताया नहीं कि आप कहाँ रहते हैं?
(स) आपने बताया नहीं, कि आप कहाँ रहते हैं?
(द) आपने, बताया नहीं कि आप, कहाँ रहते हैं?

व्याख्या-(ब) आपने बताया नहीं कि आप कहाँ रहते हैं? शुद्ध वाक्य है।

13. सिर से पानी गुजरना मुहावरे का निकटतम अर्थ है?
(अ) मर्यादा भंग होना।
(ब) समय सीमा समाप्त होना।
(स) सहनशीलता की सीमा पार होना।
(द) बहुत लजित हो जाना।

व्याख्या-(स) सिर से पानी गुजरना मुहावरे का अर्थ है- सहनशीलता की सीमा पार होना।

14. 'बाँबी में हाथ तू डाल, मंत्र मैं पढ़ूँ' लोकोक्ति का उचित अर्थ है?
(अ) आप स्वयं नष्ट होना और दूसरों को भी थोड़ी हानि पहुँचाना।
(ब) कहना बहुत, करना थोड़ा।
(स) जिसे शरण दी, उसकी रक्षा अवश्य करना।
(द) जोखिम का काम दूसरों को सौंपकर स्वयं आसान काम करना।

व्याख्या-(द) 'बाँबी में हाथ तू डाल, मंत्र मैं पढ़ूँ' लोकोक्ति का अर्थ है- जोखिम का काम दूसरों को सौंपकर स्वयं आसान काम करना।

15. 'चित भी मेरा पट भी मेरा, अंटा मेरे बाप का' लोकोक्ति का आशय है?
(अ) अपनी जीत के प्रति आशंकित होना
(ब) दूसरों पर बलपूर्वक रोब जमाना
(स) खेल के सभी दाँव-पेंच जानना
(द) हर दशा में अपना ही लाभ चाहना

व्याख्या-(द) 'चित भी मेरा पट भी मेरा, अंटा मेरे बाप का' लोकोक्ति का अर्थ है- हर दशा में अपना ही लाभ चाहना।

16. तुम शास्त्री जी पर आरोप लगाकर.....की कोशिश कर रहे हो। उक्त वाक्य के रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए उपयुक्त मुहावरा है?
(अ) सूरज पर धूल फेंकने
(ब) सिर मारने
(स) आकाश के तारे तोड़ने
(द) सूरज को दिया दिखाने

व्याख्या-(अ) उक्त वाक्य के लिए सही मुहावरा है- सूरज पर धूल फेंकना।

ध्यातव्य-प्रश्न संख्या 17 से 20 तक के उत्तर निम्नलिखित अनुच्छेद के आधार पर दीजिए?

जिन कर्मों में किसी प्रकार का कष्ट या हानि सहने का साहस अपेक्षित होता है उन सब के प्रति उत्कण्ठापूर्ण आनन्द उत्साह के अन्तर्गत लिया जाता है। कष्ट या हानि के भेद के अनुसार उत्साह के भी भेद हो जाते हैं। साहित्य-मीमांसकों ने इसी दृष्टि से युद्ध-वीर, दान-वीर, दया-वीर इत्यादि भेद किये हैं। इनमें सबसे प्राचीन और प्रधान युद्ध वीरता है, जिसमें आघात, पीड़ा क्या मृत्यु तक की परवा नहीं रहती। इस प्रकार की वीरता का प्रयोजन अत्यन्त प्राचीन काल से पड़ता चला आ रहा है, जिसमें साहस और प्रयत्न दोनों चरम उत्कर्ष पर पहुँचते हैं। पर केवल कष्ट या पीड़ा सहन करने के

साहस में ही उत्साह का स्वरूप स्फुरित नहीं होता। उसके साथ आनन्द-पूर्ण प्रयत्न या उसकी उत्कण्ठा का योग चाहिए। बिना बेहोश हुए भारी फोड़ा चिराने को तैयार होना साहस कहा जायेगा, पर उत्साह नहीं। इसी प्रकार चुपचाप, बिना हाथ-पैर हिलाये, घोर प्रहार सहने के लिए तैयार रहना साहस और कठिन-से-कठिन प्रहार सहकर भी जगह से न हटना धीरता कही जायेगी। ऐसे साहस और धीरता को उत्साह के अन्तर्गत तभी ले सकते हैं जबकि साहसी या धीर उस काम को आनन्द के साथ करता चला जायेगा जिसके कारण उसे इतने प्रहार सहने पड़ते हैं। सारांश यह कि आनन्दपूर्ण प्रयत्न या उसकी उत्कण्ठा में ही उत्साह का दर्शन होता है, केवल कष्ट सहने के निश्चेष्ट साहस में नहीं। धृति और साहस दोनों का उत्साह के बीच संचरण होता है।

17. धीरता शब्द है?
(अ) संज्ञा (ब) क्रिया-विशेषण
(स) क्रिया (द) विशेषण (अ)

18. अनुच्छेद के अनुसार धृति का अर्थ है?
(अ) स्थापित करना (ब) धैर्य
(स) यज्ञ (द) अधिकृत करना (ब)

19. उत्साह का स्वरूप स्फुरित होता है?
(अ) कष्ट सहने के निश्चेष्ट साहस में।
(ब) आनन्दपूर्ण प्रयत्न या उसकी उत्कंठा में।
(स) पीड़ा सहन करने के साहस में।
(द) घोर प्रहार सहन करने के साहस में। (ब)

20. अनुच्छेद के आधार पर बताइये कि साहित्य-मीमांसकों ने किसे उत्साह का भेद नहीं माना है?
(अ) दान-वीर (ब) दया-वीर
(स) युद्ध-वीर (द) कर्म-वीर (द)

21. शब्द-शक्ति विषयक कौन सा कथन गलत है?
(अ) संध्या हो गई। वाक्य में व्यंजना शब्द-शक्ति है।
(ब) व्यंजना शब्द-शक्ति छिपे हुए अर्थ का बोध कराती है।
(स) वाचक शब्द के प्रकार हैं- रुढ़, यौगिक, योगरूढ़।
(द) पंकज रूढ़ शब्द है।

व्याख्या-(द) पंकज यौगिक शब्द हैं। रचना के आधार पर शब्द तीन प्रकार के होते हैं- (1) रूढ़ शब्द (2) यौगिक शब्द और (3) योगरूढ़ शब्द।
ऐसे शब्द जो वर्षों से किसी विशेष अर्थ के लिए प्रयुक्त होते रहे हैं, जिनके टुकड़े करने पर भी कोई अन्य अर्थ नहीं निकलता है, रूढ़ शब्द कहलाते हैं। जैसे-रोटी, कपड़ा, मकान, आकाश, दीपक, पेड़ आदि।

यौगिक शब्द दो या दो से अधिक अर्थवान शब्दों के योग से बने होते हैं। यौगिक शब्द दो या दो से अधिक शब्दों से बनते हैं, उन शब्दों का अपना अर्थ भी होता है। जैसे-संधि, समास, उपसर्ग व प्रत्यय से बने शब्द।
वे शब्द जो अलग-अलग अर्थ देने वाले शब्दों के योग से बनते हैं, किंतु नया बना शब्द अपने अनेक अर्थों में से किसी विशेष अर्थ के लिए ही रूढ़ हो गया है, योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं।

22. जब क्रम की दृष्टि से लोक एवं शास्त्र के कथित नियमों का उल्लंघन किया जाय, तो कौन सा काव्यदोष होता है?
(अ) अप्रतीतत्व (ब) दुष्क्रमत्व
(स) ग्राम्यत्व (द) अक्रमत्व

व्याख्या-(ब) जब क्रम की दृष्टि से लोक या शास्त्र के कथित नियमों का उल्लंघन किया जाय, तब दुष्क्रमत्व काव्य दोष होता है। अर्थात् जो बात पहले होनी चाहिए वह बात बाद में होती है या बाद में होने वाली बात पहले होती है तो यह दुष्क्रमत्व काव्य दोष माना जाता है। जैसे पन्द्रह लाख नहीं तो बीस लाख ही दे दो। यहाँ संख्याओं का क्रम दूषित है, क्योंकि पहले बीस लाख मांगने चाहिए, पंद्रह लाख बाद में आने चाहिए। इसी प्रकार के क्रम भंग को ही दुष्क्रमत्व काव्य दोष कहते हैं।
अन्य उदाहरण देखिए-
''चाँद तो क्या तुम तो मुक्ता से भी सुंदर हो।''
यहाँ मुक्ता शब्द पहले आना चाहिए, चाँद बाद में।

23. शब्द-शक्तियों के संबंध में कौन सा कथन सुमेलित नहीं है?
(अ) शब्द का साक्षात् संकेतित अर्थ-बोध कराने वाले व्यापार को व्यंजना शक्ति कहते हैं।
(ब) मुख्यार्थ बाधित होने पर रूढ़ि या प्रयोजन से अन्य अर्थ-बोध लक्षणा शक्ति से होता है।
(स) शब्द की शक्ति उसके अंतर्निहित अर्थ को व्यक्त करने वाला व्यापार है।
(द) शब्द का लोक प्रचलित, नामवाची अर्थ-बोध कराने वाली शक्ति अभिधा है।

व्याख्या-(अ) शब्द का साक्षात् संकेतित अर्थ-बोध कराने वाले व्यापार को व्यंजना शक्ति नहीं, अभिधा शब्द शक्ति कहते हैं।

24. काव्यांश और उसमें निहित अलंकार का कौन सा जोड़ा असंगत है?

(अ) मुनि तापस जिनतें दुख लहहीं। ते नरेस बिनु पावक दहहीं।। - विभावना
(ब) जानि स्याम को स्याम घन, नाचि उठे वन मोर। - भ्रांतिमान
(स) सुबरन को ढूँढत फिरै, कवि कामी अरु चोर। - श्लेष
(द) विष पीते हैं मेघ, विरहिणी प्राण निकलते।- विरोधाभास

व्याख्या-(द) विष पीते हैं मेघ, विरहिणी प्राण निकलते। पंक्ति के अनुसार विष मेघ पी रहा है अर्थात् बादल घुमड़ रहे हैं, किन्तु प्राण विरहणी के निकल रहे हैं, यह असंगति है। इसलिए यहाँ असंगति अलंकार होगा।

25. बेसर मोती दुति झलक परी अधर पर आनि।
पट पोंछति चूनों समुझि नारी निपट अयानि।।
प्रस्तुत पद में अलंकार है?
(अ) असंगति (ब) उपमा
(स) संदेह (द) भ्रान्तिमान

व्याख्या-(द) नायिका के आभूषण की चमक उसके अधर पर है- नायिका को चूना लगने का भ्रम हो जाता है, इसलिए बार-बार नायिका अपने अधरों को पोंछ रही है, अत: यहाँ भ्रांतिमान अलंकार है।

26. माधुर्य गुण के संबंध में असंगत कथन है-
(अ) दीर्घ सामासिक पदों का प्रयोग नहीं किया जाता है।
(ब) ट, ठ, ड, ढ़ को छोड़कर अपने पंचम वर्ण से संयुक्त स्पर्श वर्णों का प्रयोग किया जाता है।
(स) माधुर्य गुण का संबंध श्रृंगार, करुण तथा शांत रसों से होता है।
(द) रेफ युक्त वर्णों का प्रयोग बहुलता से किया जाता है।

व्याख्या-(द) रेफ व लम्बे-लम्बे सामासिक पदों का प्रयोग ओज गुण में अधिक होता है, माधुर्य गुण में नहीं।

27. प्रबल जो तुम में पुरुषार्थ हो।
सुलभ कौन तुम्हें न पदार्थ हो।
प्रगति के पथ में विचरो उठो।
भुवन में सुख-शांति भरो उठो।
उपर्युक्त कवितांश में कौन सा छंद प्रयुक्त हुआ है?
(अ) सवैया छंद (ब) कवित्त छंद
(स) द्रुतविलंबित छंद (द) चौपाई छंद

व्याख्या-(स) उपर्युक्त पद्य में द्रुतविलम्बित छंद का प्रयोग हुआ है।

28. आचार्य विश्वनाथ द्वारा वर्णित रस के स्वरूप में परिगणित नहीं है-
(अ) रस वैद्यांतर स्पर्श युक्त है।
(ब) रस चिन्मय है।
(स) रस अखण्ड है।
(द) रस ब्रह्मानंद सहोदर है।

व्याख्या-(अ) रस वैद्यांतर स्पर्श युक्त है, आचार्य विश्वनाथ द्वारा वर्णित रस के स्वरूप का परिगणित पद नहीं है।

29. निम्नलिखित में से छंद विषयक असंगत कथन है?
(अ) दोहा छंद के सम चरणों के अंत में गुरु लघु होता है।
(ब) चौपाई मात्रिक सम छंद है।
(स) हरिगीतिका छंद के प्रत्येक धरण में 26 मात्राएँ होती है।
(द) सोरठा छंद के विषम चरणों में 11 मात्राएँ होती हैं।

व्याख्या-(स) हरिगीतिका छंद के प्रत्येक चरण में 28 मात्राएँ होती है व 16 तथा 12 मात्राओं के बाद यति होती है। इसके प्रत्येक चरण के अंत में गीतिका छंद की तरह ही लघु-गुरु (।ऽ) होना आवश्यक है।

30. आदिकाल का नाम मैंने वीरगाथा-काल रखा है। उक्त काल के भीतर दो प्रकार की रचनाएँ मिलती हैं- अपभ्रंश की और देशभाषा (बोलचाल) की। उक्त कथन है-
(अ) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(ब) शिवसिंह सेंगर
(स) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी
(द) डॉ. रामकुमार वर्मा

व्याख्या-(अ) उक्त कथन आचार्य रामचंद्र शुक्ल का है।

31. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सुमेलित नहीं है?

नामकरण		विद्वान्
(अ) वीर काल	-	विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
(ब) सिद्धसामत काल	-	डॉ. रामकुमार वर्मा
(स) चारणकाल	-	ग्रियर्सन
(द) प्रारंभिक काल	-	मिश्रबंधु

व्याख्या-(ब) सिद्धसामंत काल नामकरण रामकुमार वर्मा ने नहीं किया, बल्कि राहुल सांकृत्यायन ने किया है।

32. शांत रस के प्रमुख संचारी भाव हैं-
(अ) वितर्क, आवेग, जड़ता
(ब) दैन्य, शंका, चिंता